रीता

शोधार्थी

डॉ० सरोज कुमार जायसवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षक - शिक्षा विभाग प्रो० एच०एन० मिश्रा कॉलेज

ऑफ एजुकेशन, कानपुर

विशेष शिक्षा में अध्ययनरत बी० एड० प्रशिक्षुओं के व्यावसायिक दुश्चिंता का अध्ययन

शोध-सार

वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ती ने विशेष शिक्षा बी.एड. में प्रशिक्षणरत शिक्षक प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दुश्चिंता की पहचान, कारण एवं सम्बंधित सुझाव पर कार्य किया है। न्यादर्श चुनने के लिए यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक का उपयोग किया गया। कुल न्यादर्श राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के दो संस्थानों से 73 बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं से लिया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया । प्राप्त आंकड़ों का गुणात्मक शोध विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षुओं मे शैक्षणिक व्यवसायिक दुश्चिंता मापनी के कई आयाम पर चिंता पायी गयी जैसे शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा, शिक्षण व्यवसाय से सम्बंधित सरकारी नीतियों पर प्रशिक्षुओं में दुश्चिंता पायी गयी एवं शिक्षण व्यवसाय का चुनाव, शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति , सामाजिक पहचान एवं शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी एवं नवाचार के आयाम पर वह सकारात्मक पाये गये अर्थात उनका चिन्ता प्रतिशत कम पाया गया। बी०एड० प्रशिक्षुओं में शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता स्तर को कम करने के लिए विशेष शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण एवं सरकारी नीतियों को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है ।

सार संक्षेप - विशेष शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षु, व्यावसायिक दुश्चिंता, गुणात्मक शोध**,।**

भूमिका

यह सर्वविदित है कि, समाज और राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्र का प्रमुख और वास्तविक निर्माता शिक्षक को ही माना जाता है। जिस तरह से पौधे को वृक्ष

रूप में विकसित करने के लिए अथक प्रयास करके उसकी देखभाल की जाती है ठीक वैसे ही विद्यालय रूपी बगीचे में पल्लवित होने वाले बालक रूपी पौधों का सर्वांगीण विकास एक शिक्षक द्वारा किया जाता है। वह अपने छात्रों को शिक्षित एवं बुद्धिमान बनाकर ज्ञान की एक ऐसी अखण्ड ज्योति प्रारम्भ करता है जो देश और समाज के अज्ञानता को दूर कर सत्य एवं सामाजिक न्याय का प्रकाश फैलाती है।

किसी भी शिक्षण संस्थान कि प्रसिद्धि संस्थान में सेवारत (कार्यरत) शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। समाज में समय और स्थान से परे शिक्षक को सर्वाधिक सम्मान प्राप्त है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वह छात्रों के लिए सबसे अधिक प्रेरणादायी एंव संवेगात्मक स्रोत बने। शिक्षकों की निष्ठा तथा बलिदान के कारण ही समाज में उनको अद्वितीय स्थान प्राप्त है। परन्तु यक्ष प्रश्न यह है कि इस प्रकार के शिक्षक कहाँ और कैसे मिलेगें? प्रतिभाशाली एवं योग्य शिक्षकों की कमी उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक अवरोध है। मेधावी युवा पीढ़ी के लिए, एवं उनमें अभिप्रेरणा उत्पन्न करने के लिए तथा उनमें वांछनीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए शिक्षण व्यवसाय को उच्च आकांक्षा पूर्तिकर्ता होने की आशा की जाती है। शायद ही कोई इस तथ्य से इन्कार कर सकता है कि शिक्षण, एक व्यवसाय के रूप में समर्पण एवं सेवा - भाव की मांग करता है एवं इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वह प्राथमिक स्कूल का शिक्षक है अथवा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, दोनों में ही अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षण पेशे का सभी व्यवसायों में बहुत प्रतिष्ठित स्थान है। एक शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है। सभ्य दुनिया की लगभग सभी संस्कृतियों ने अपने शिक्षकों को बहुत उच्च सम्मान प्रदान किया है। उन्हें अक्सर "मास्टर" "मेंटर" और "गुरु" जैसे नाम दिए जाते थे। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों ने सभ्यता के पूरे इतिहास में अपने आसपास की दुनिया की उम्मीदों पर ध्यान दिया एवं खरा उतरने का प्रयास किया है। अतीत के अधिकांश विचारकों और दार्शनिकों को आज भी याद किया जाता है समय बदल गया है और समाज और संस्कृतियों में भारी विविधता आई है, लेकिन एक शिक्षक के कार्य मुख्य रूप से वही हैं, जो ज्ञान को अगली पीढ़ी को हस्तांतरण करते हैं।

व्यावसायिक दुश्चिंता

चिन्ता संज्ञानात्मक, शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहारिक विशेषता वाले घटकों की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है। यह घटक एक अप्रिय भाव बनाने के लिए जुड़ते हैं जो की आम तौर पर बेचैनी, आशंका, डर और क्लेश से सम्बंधित हैं। देखा जाए तो, यह भय से कुछ अलग है, जो कि

किसी ज्ञात खतरे के कारण उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त भय ,परिहार के विशिष्ट व्यवहारों से संबंधित है, जबकि चिंता अनुभव किये गये अनियंत्रित या अपरिहार्य खतरों का परिणाम है। एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि चिन्ता "एक भविष्य उन्मुख मनोदशा है, जिसमें एक व्यक्ति आगामी नकारात्मक घटनाओं का सामना करने का प्रयास करने के लिये इच्छुक या तैयार होता है" जो कि यह सुझाव देता है कि भविष्य बनाम उपस्थित खतरों के बीच एक अंतर है जो भय और चिन्ता को विभाजित करता है। चिंता को तनाव की एक सामान्य प्रतिक्रिया माना जाता है। यह किसी व्यक्ति कि किसी मुश्किल स्थिति, काम पर या स्कूल में किसी को इससे निपटने के लिए उत्साहित करने भर, से निपटने में मदद कर सकती है। अधिक चिंता करने पर, व्यक्ति दुष्चिन्ता का शिकार हो सकता है। व्यावसायिक दुश्चिंता तब होती है जब पर्यावरण/कार्यस्थल की मांगों और इन मांगों को पूरा करने और किसी व्यक्ति की क्षमता के बीच एक विसंगति होती है। व्यावसायिक दुश्चिंता के मुख्य कारणों में से एक कार्य अधिभार है। व्यावसायिक दुश्चिंता को शारीरिक और भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो तब होता है जब एक कार्यकर्ता अपने काम की मांगों और इन को पूरा करने के लिए अपनी क्षमता या संसाधनों के बीच असंतुलन को मानता है। समाज में सांस्कृतिक मानदंडों और परंपराओं में बदलाव के साथ, शिक्षक से अपेक्षाओं में भारी बदलाव आया है। शिक्षण अब एक बहुत ही मांग वाला व्यवसाय बन गया है एवं इसके साथ-साथ शिक्षकों को परिवर्तनशील एवं विकासोन्मुखी समाज के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की चुनौती भी प्रारंभ हो गई है। व्यावसायिक तनाव बड़े पैमाने पर बढ़ती व्यावसायिक जटिलताओं और व्यक्तियों पर बढ़ते आर्थिक दबाव के कारण बड़े पैमाने पर शिक्षण पेशा बन गया है। शिक्षकों के बीच संकट का एक प्रमुख स्रोत शिक्षकों की सामाजिक जरूरतों और नौकरियों की मांगों को पूरा करने में है की विफलता का परिणाम है। शिक्षक को राष्ट्र के निर्माण में अपनी स्पष्ट भूमिका के बारे में पता होना चाहिए। आज, शिक्षक अपने नियमित चिंग लोड के साथ-साथ अतिरिक्त कक्षाओं के बोझ तले दबे हुए हैं। एक शिक्षक के व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास के लिए व्यावसायिक संतुष्टि एक आवश्यक शर्त है। उपस्थित शिक्षक की स्थिति कमजोर होती है। कॉलेज के शिक्षकों का विरोध है कि उन्हें पर्याप्त भुगतान नहीं किया गया है। वेतन का महत्व एक व्यावसायिक संस्थान में एक कारक है जिस पर बहुत अधिक जोर दिया गया है।

सभी शिक्षकों के लिए एक नया परिवर्तन तब शुरू होता है जब समावेशी शिक्षा का प्रारंभ 1990 के दशक से प्रारंभ हो जाता है जब विश्व भर में समावेश और विविधता को बढ़ाने के लिए प्रयास शुरू हो जाते हैं हालांकि इसके मूल सिद्धांत और विचार पहले से मौजूद थे लेकिन 1990 में इसे

एक विशिष्ट दृष्टिकोण के रूप में पहचान और प्रोत्साहित किया गया। भारत में समावेशी शिक्षा को 2009 में सर्व शिक्षा अभियान के तहत शुरू किया गया जिसका उद्देश्य सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना था चाहे उनकी पृष्ठभूमि या क्षमता कुछ भी हो। समावेशी शिक्षा के कारण सभी शिक्षकों की जवाबदेही अत्यंत व्यापक हो गई ।जहां पूर्व में एक शिक्षक सामान्य बच्चों की शिक्षा प्रणाली को लेकर जवाबदेह होता था अब उसे सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भी उतना ही जिम्मेदार माना जाने लगा इन बच्चों के शिक्षा के लिए एक प्रशिक्षित शिक्षक समुदाय की आवश्यकता पड़ने लगी जो उनके व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार सहायता प्रदान कर सके क्योंकि अगर हम समावेशी शिक्षा का इतिहास देखें तो प्रारंभ में समावेशी शिक्षा का कोई संप्रत्यय नहीं प्राप्त होता है क्योंकि सभी दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रारंभ में एक अलग विशेष विद्यालय हुआ करता था जिसमें सभी दिव्यांग बच्चे अध्ययन किया करते थे लेकिन विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की मांगों के अनुसार एवं इन बच्चों का समाज में एकीकरण हो इसको देखते हुए 1974 में एकीकृत शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ की गई लेकिन इस शिक्षा व्यवस्था से बच्चों में उतना परिवर्तन नहीं हुआ जितना कि इसके लक्ष्य निर्धारित थे क्योंकि एकीकृत शिक्षा व्यवस्था स्कूलों की व्यवस्था में परिवर्तन न करके एक बच्चे में परिवर्तन चाहती है कि विशेष आवश्यकता वाला बालक स्कूल के संसाधनों के अनुसार अपने में परिवर्तन लाएगा एक उदाहरण से समझते हैं एक विद्यालय में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN)के लिए मुक्त आवागमन की व्यवस्था नहीं है तो इसके लिए विद्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है बच्चा अपने संसाधनों के द्वारा कक्षा-कक्ष तक पहुंचेगा यह सब बालक के माता-पिता एवं अभिभावक पर निर्भर करता है न कि विद्यालय इसके लिए कोई सुविधा प्रदान करता है। विभिन्न शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकताओं द्वारा इस शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन की मांग की गई । अतः एकीकृत शिक्षा व्यवस्था के बाद समावेशी शिक्षा अस्तित्व में आयी जिसमें एक सामान्य स्कूल में सामान्य बच्चों के साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे बिना किसी कठिनाई के सरलता पूर्वक अध्ययन करेंगे । समावेशी कक्षा के अन्तगर्त सामान्य स्कूलों में सामान्य कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए विशेष संसाधन कक्ष ,विशेष शिक्षक, एवं व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम (IEP) आदि का प्रावधान किया गया जिससे इनका सर्वांगीण विकास संभव हो सके। अतः समावेशी शिक्षा के द्वारा विशेष शिक्षकों की मांग बढ़ने लगी अर्थात सभी विद्यालयों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए एक विशेष शिक्षक नियुक्त करने का प्रावधान किया गया है ये शिक्षक विशेष शिक्षा में प्रशिक्षण

प्राप्त करते हैं जिनका पूरा प्रशिक्षण विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकता के अनुसार डिजाइन किया जाता है। समावेशी शिक्षा की व्यापकता को देखते हुए विशेष शिक्षा में प्रशिक्षण देने वाले संस्थाओं की मांग बढ़ने लगी। इस शोध कार्य द्वारा विशेष शिक्षा में अध्यनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं के के शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता के बारे में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है कि इनके प्रशिक्षण, नियुक्ति, स्थानापन्न एवं सरकार की नीतियों को लेकर इनकी क्या राय है? तथा प्रशिक्षणार्थियों को अपने संपूर्ण प्रशिक्षण के दौरान किसी प्रकार की व्यावसायिक दुश्चिंता का सामना करना पड़ता है इसके सम्बंध में इनकी राय जानने के लिए प्रस्तावित अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य एवं विधि

प्रस्तुत अध्ययन में विशेष शिक्षा बी.एड. में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं के लिए शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी से संबंधित कुल छः घटक या आयाम निर्धारित किये गये है जैसे - व्यवसाय का चुनाव, व्यवसाय की प्रकृति, व्यवसाय की सुरक्षा, सरकारी नीतियां, सामाजिक पहचान तथा तकनीकी एवं नवाचार। शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी से संबंधित विभिन्न घटकों पर भावी अध्यापक शिक्षकों का राय ज्ञात करना एवं विशेष शिक्षा में शिक्षण -प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाने हेतु सुझाव देना प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली से जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय एवं अष्टावक्र इंस्टीट्यूट आफ रिहैबिलिटेशन साइंस एंड रिसर्च (सेक्टर -14 रोहिणी)में अध्ययनरत 73 बी०एड० प्रक्षिणार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से प्रतिदर्श के रूप में किया गया है तथा आंकड़ों के संकलन हेतु शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया गया है। शैक्षणिक व्यवसायिक दुश्चिंता मापनी का निर्माण लिकर्ट मापनी के आधार पर किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना

शैक्षणिक व्यवसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न घटकों के प्रति विशेष शिक्षा में प्रशिक्षणरत भावी अध्यापक शिक्षको की राय अधोलिखित है -

शिक्षण व्यवसाय के चुनाव से संबंधित दुश्चिंता-

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय का चुनाव से संबंधि व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका-1 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका-1 में प्रस्तुत आवृत्ति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी. एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय के चुनाव के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत

है। यह शिक्षक व्यवसाय के चुनाव के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका-1. बी. एड. प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय के चुनाव से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित`	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	04	08	04	35	22	73
%	5.39	11.59	5.47	50.68	30.13	100%

तालिका-1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय के चुनाव से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 30.13% बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 50.68% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 5.47% बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 11.59% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 5.39% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय के चुनाव से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 80% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 16% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि व्यवसाय के चुनाव से संबंधित दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया सकारात्मक है । अतः विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय को लेकर दुश्चिंता का प्रतिशत कम पाया गया इसलिये विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय का चुनाव उपयुक्त माना जा सकता है।

व्यवसाय की प्रकृति से सम्बंधित दुश्चिंता

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका-2 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका-2 में प्रस्तुत आवृत्ति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी.एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत है। यह शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका -2 बी. एड. प्रशिक्षुओं का व्यवसाय की प्रकृति से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	09	10	04	31	19	73
%	13.04	14.49	5.47	42.46	26.02	100%

तालिका-2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 26. 02% बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 42 .46% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 5.47% बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 14.49% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 13.04% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 68% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 27 % बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि व्यवसाय की प्रकृति से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया सकारात्मक है। इस प्रकार विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय की प्रकृति को लेकर प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक दुश्चिंता का प्रतिशत कम पाया गया अतः विशेष शिक्षा में अध्यनरत बीएड प्रशिक्षुओं के लिये शिक्षण व्यवसाय को उपयुक्त माना जा सकता है।

व्यवसाय की सुरक्षा से सम्बंधित दुश्चिंता

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका-3 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका-3 में प्रस्तुत आवृत्ति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी. एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत है। यह शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका-3 बी. एड. प्रशिक्षुओं का व्यवसाय की सुरक्षा से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	16	36	03	12	06	73
%	22.85	51.42	4.10	16.43	8.21	100%

तालिका-3 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 8 .21 % बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 16 .43% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 4. 10% बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 51.42% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 22.85.% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 24% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 73 % बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि व्यवसाय की सुरक्षा से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया नकारात्मक है। इस प्रकार विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा को लेकर प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक दुश्चिंता का प्रतिशत अधिक पाया गया इसलिये विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय की सुरक्षा को लेकर बीएड प्रशिक्षु चिंतित पाए गए अतः विशेष शिक्षकों के संदर्भ में व्यवसाय की सुरक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

सरकारी नीतियाँ से सम्बंधित दुश्चिंता

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय में सरकारी नीतियों से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका- 4 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका- 4 में प्रस्तुत आवृति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी. एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय से संबंधित सरकारी नीतियों के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत है। यह शिक्षण व्यवसाय में सरकारी नीतियों के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका-4 बी. एड. प्रशिक्षुओं का व्यवसाय की सुरक्षा से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	15	37	05	11	05	73
%	22.05	54.41	6.84	15.06	6.84	100%

तालिका- 4 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय में सरकारी नीतियों से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 6.84 % बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 15.06% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 6. 84% बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 54.41% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 22.05.% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय में सरकारी नीतियों से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 21% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 76 % बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि शिक्षण व्यवसाय से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया नकारात्मक है। इस प्रकार विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय में सरकारी नीतियों को लेकर प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक दुश्चिंता का प्रतिशत अधिक पाया गया इसलिये विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय से संबंधित सरकारी नीतियों को लेकर बीएड प्रशिक्षु अधिक चिंतित पाए गए ।अतः विशेष शिक्षकों के संदर्भ में सरकारी नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने एवं उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है।

सामाजिक पहचान

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका-5 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका- 5 में प्रस्तुत आवृत्ति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी. एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत है। यह शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका-5 बी. एड. प्रशिक्षुओं का सामाजिक पहचान से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	09	12	07	31	14	73
%	13.63	18.18	9.58	42.46	19.17	100%

तालिका-5 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 19 .17 % बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 42. 46% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 9.58% बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 18.18% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 13.63% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 61% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 31% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि शिक्षण व्यवसाय से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया सकारात्मक है। इस प्रकार विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय में सामाजिक पहचान को लेकर प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक दुश्चिंता का प्रतिशत कम पाया गया इसलिये विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय से संबंधित सामाजिक पहचान को लेकर बीएड प्रशिक्षु कम चिंतित पाए गए। अतः विशेष शिक्षकों के सन्दर्भ में सामाजिक पहचान को लेकर यह व्यवसाय अधिक उपयुक्त माना जा सकता है।

तकनीकी एवं नवाचार सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता

भावी अध्यापक शिक्षकों अर्थात बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी एवं नवाचार से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता तालिका-6 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका-6 में प्रस्तुत आवृत्ति एवं प्रतिशत द्विवर्षीय विशेष बी.एड. में अध्यनरत प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय में के प्रति शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता मापनी के विभिन्न पदों पर प्रशिक्षुओं द्वारा की गयी अनुक्रियाओं का औसत है। यह शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी एवं नवाचार के प्रति प्रशिक्षुओं के औसत व्यावसायिक दुश्चिंता को प्रदर्शित करता है।

तालिका बी. एड. प्रशिक्षुओं का तकनीकी एवं नवाचार से सम्बंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रस्तुतिकरण

	पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत	कुल
F	08	10	08	32	15	73
%	12.30	15.38	10.95	43.83	20.54	100%

तालिका-6 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी नवाचार से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता के प्रति 20.54 % बी.एड० प्रशिक्षु पूर्णतः सहमत, 43. 83% बी.एड० प्रशिक्षु सहमत, 10.95 % बी.एड० प्रशिक्षु अनिश्चित. 15. 38% बी०एड० प्रशिक्षु असहमत एवं 12.30% बी०एड० प्रशिक्षु पूर्णतः असहमत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी एवं नवाचार से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति लगभग 63% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया सकारात्मक है तथा लगभग 27% बी०एड० प्रशिक्षुओं की अनुक्रिया नकारात्मक है। चूँकि शिक्षण व्यवसाय तकनीकी एवं नवाचार से संबंधित व्यावसायिक दुश्चिंता घटक के प्रति अधिकांश B.Ed विद्यार्थियों की अनुक्रिया सकारात्मक है। इस प्रकार विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय में तकनीकी एवं नवाचार को लेकर प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक दुश्चिंता का प्रतिशत कम पाया गया इसलिये विशेष शिक्षा में शिक्षण व्यवसाय से संबंधित तकनीकी एवं नवाचार को लेकर बी.एड. प्रशिक्षु कम चिंतित पाए गए ।अतः विशेष शिक्षकों के सन्दर्भ में तकनीकी एवं नवाचार उपयुक्त माना जा सकता है।

विशेष शिक्षा में अध्यनरत बीएड प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षणिक व्यावसायिक दुश्चिंता से संबंधित सभी घटकों में सुधार हेतु दिये गए सुझावों के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव अधोलिखित है

- द्विवर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम को अधिक क्रिया आधारित बनाया जाना चाहिए।
- द्विवर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु को वर्तमान जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। प्रशिक्षण संचालन को बेहतर करने की आवश्यकता है।
- सरकार एवं सामाजिक संगठन ऐसे मानव संसाधन का महत्व समझकर इनकी नियुक्ति, पद सृजन ,चयन नियमावली सामान्य शिक्षकों की भाँति स्पष्ट होनी चाहिए ।
- सामान्य शिक्षकों की भांति विशेष शिक्षकों के लिए भी स्थायी नियुक्तियां का दायरा बढ़ाया जाये।
- तकनीकी संसाधनों को बढ़ाया जाना चाहिए।

- सुविधाओं के साथ-साथ इनके लिए उपयुक्त मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता उपलब्ध कराया जाये।।
- सुविधा युक्त उच्च कोटि के प्रशिक्षण संस्थान की व्यवस्था की जाये प्रशिक्षण संस्थान की संख्या में वृद्धि की जाये।
- डिग्री की वैधता से सम्बंधित नवीनीकरण प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है।
- विशेष शिक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।
- तकनीकी संसाधनों को बढ़ाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.अग्रवाल, आर, & राव, एल. एन (2011)" फॉर डिसेबल्ड चिल्ड्रन" दिल्ली शिप्रा पब्लिकेशंस

2. आजाद, वाई. ए. (1996) इंटीग्रेटेड डिसएबल इन कॉमन स्कूल, ए सर्वे आफ आई. ई. डी. सी. इन द कंट्री. न्यू दिल्ली. एन सी ई आर टी।

3. आनंद, विनती (2013) "मनोविकृति-विज्ञान" दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन ।

4. अग्रवाल, रश्मि (2017) "एजुकेशनल वोकेशनल गाइडेंस एंड काउंसलिंग" दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन ।

5. डॉ जोसेफ आर० (2013)" पुनर्वास के आयाम" समाकलन पब्लिशर्स करौंदी वाराणसी।

6. फ्रॉयड (1934) "प्रॉब्लम्स ऑफ एंजाइटी" डब्लू डब्लू नार्टन न्यूयार्क पृष्ठ संख्या 108, 117.-

7. मालवीय, राजीव (2008)" शिक्षा के प्रगतिशील सिद्धांत" इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन प्रकाशक ।

8. मिश्रा, मं. (2008). भारतीय शिक्षा पद्धति और उसकी समस्याएँ. नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन्स.

9 आर , ए. (2006). शिक्षा अनुसंधान, मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन.

10 .शर्मा, आर. ए., और चतुर्वेदी, शिखा (2005). अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी. मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन.

शर्मा, आर. ए. (2008). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो.

-.

1.Desai, Ashok. J. (2012). Problems of Teacher Education In India. International Journal for Research in Education (IJRE), Vol.1, Issue: 1, p 54-58.

2.Kothari, D. S. (1966). Report of the Education Commission (1964-66). Govt. of India, New Delhi.

3.Shah, D. B. (2004). Educational Research. Ahmadabad: Pramukh Prakasan.

4.Taneja, R.P. (2000). Encyclopedia of Comparative Education. Anmol Publications Pvt. Ltd., New Delhi.

5.Vashist, S.R. (2003). Professional Education of Teachers. Jaipur: Mangal Deep.